Paper CC07 : Applied Theory

राग बिलासखानी तोड़ी

परिचय

राग बिलासखानी तोड़ी एक प्राचीन एवं प्रचलित राग है। प्रस्तुत राग के रचयिता सुप्रसिद्ध गायक सम्राट तानसेन के सुपुत्र बिलास खाँ माने जाते है। इस राग के नाम से भी यह स्पष्ट हो जाता है। इस राग को सर्व सम्मति से भैरवी थाट के अन्तर्गत माना गया हैं, क्योंकि इसमें सारे स्वर भैरवी की तरह कोमल प्रयुक्त होते है। इस राग का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गंधार हैं। राग का गायन समय दिन का द्वितीय प्रहर है। प्रस्तुत राग के वादी–संवादी, थाट व गायन समय के विषय में सभी विद्वानों का एक मत हैं।

इस राग की जाति के संबंध में गुणीजनों में काफी मतभेद देखने को मिलते है। कुछ लोगों के अनुसार इस राग की जाति औड़व–सम्पूर्ण, कुछ लोगों के अनुसार औड़व–षाड़व, कुछ लोगों के अनुसार सम्पूर्ण–सम्पूर्ण, तो कुछ लोगों के अनुसार इसकी जाति षाड़व–षाड़व मानी गई है। जिन लोगों के अनुसार राग की जाति औड़व–षाड़व हैं, उनके अनुसार राग का आरोह–अवरोह कुछ इस प्रकार है–

आरोह – सा रे ग प ध सां

अवरोह – रें नि ध म ग रे, रे ग म, रे ग, रे सा

जिन लोगों के अनुसार राग की जाति षाड़व–षाड़व हैं, उनके अनुसार राग का आरोह–अवरोह कुछ इस प्रकार है–

आरोह – सा रे ग प ध नि ध सां

अवरोह – रें नि ध म ग रे सा

पंडित भातखण्डे जी के क्रमिक पुस्तक मालिका, भाग 6 में बिलासखानी तोड़ी की एक बंदिश 'जबते मन मोहन', जो झूमरा ताल में निबद्ध हैं, सम्पूर्ण सम्पूर्ण जाति के आधार पर रची गई हैं। बाकी बंदिशों का स्वरूप आरोह में मध्यम व अवरोह में पंचम वर्जित करके षाड़व–षाड़व जाति के आधार पर रचना की गई है।

प्रस्तुत राग का स्वरूप कठिन होते हुए भी अत्यंत मधुर है। उत्तरांग प्रधान तथा दिन का राग होने के कारण अवरोह में राग का स्वरूप अधिक स्पष्ट होता है। यह राग भैरवी थाट का है, परन्तु इसे तोड़ी अंग से गाया जाता है। तोड़ी के अति कोमल गंधार को ध्यान में रखकर गाने से भैरवी होने का भय कम हो जाता है। इस राग के मुख्य स्वर–समुदाय हैं– रे नि सा रे ग तथा ध सां, रें नि ध म ग रे ग प।

राग बिलासखानी तोड़ी के समप्रकृतिक रागों में भैरवी, भूपाल तोड़ी व कोमल रिषभ आसावरी आते है। ये तीनों राग इस राग के समप्रकृति राग होने पर भी उच्चारण, स्वर लगाव एवं वर्जित भेद के कारण काफी भिन्न हैं। राग भैरवी सम्पूर्ण–सम्पूर्ण जाति का राग हैं एवं खटके–मुर्की के अधिक प्रयोग के कारण उसकी गति चपल हैं, भूपाल तोड़ी औड़व जाति का राग हैं, कोमल रिषभ आसावरी के आरोह में

गंधार व निषाद वर्जित हैं। इस कारण ये तीनों राग बिलासखानी से अलग प्रतीत होती हैं। इस राग की प्रकृति शांत व गंभीर हैं। षड़ज, गंधार, पंचम एवं धैवत राग के न्यास स्वर है।

स्वर–विस्तार

- सा ऽ, रे नि़ ध़ ऽ सा, ध़ सा रे ग रे, रे ग म रे ग, रे सा ऽ, सा रे ग ऽ प ऽ ऽ, ग प ध म ग रे, रे ग प ऽ ऽ, ग प ध, नि ध ऽ, म ग रे, रे ग म रे ग ऽ रे सा ऽ।
- सा रे ग प ऽ, ग प ध ऽ, प ध नि ध, म ग रे ग प ऽ ऽ, ग प ध ऽ, ध सां ऽ, ध सां रें नि ध ऽ ऽ सां ऽ, ध सां रें गं रें नि ध सां, रें नि ध ऽ म ग रे ग प ऽ ऽ, ग प ध नि ध म ग रे, रे ग म, रे ग रे सा ऽ।